हमार अँगना

परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

तक्ष शिला

अंक 10 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | अप्रैल 2021-सितम्बर 2021

संपादकीय

प्रिय पाठकों परिवर्तन बालघर आँगन द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका हमार अँगना के अंक 10 में आपका स्वागत है

प्रिय पाठकों,

बालघर आँगन परिवर्तन की शिक्षा इकाई की उप इकाई है जो पिछले 7 वर्षो से लगातार आंगनबाड़ी केंद्र के उम्र 3-6 वर्ष तक के बच्चों एव 46 सेविकाओं के साथ जुड़कर काम कर रही है। बालघर आँगन का उद्देश्य, बच्चों को खेल कविता ,कहानी के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एव भाषा का ज्ञान करवाना और कार्यक्षेत्र के आंगनवाड़ी केन्द्रों को सुदृढ़ करने हेतु सभी सेविकाओं का मार्गदर्शन करना है।

पिछले लगभग 1.5 सालों से वैश्विक महामारी कोरोना के चलते विभिन्न शिक्षण संस्थानों के बंद हो जाने से बालघर आँगन के कार्यक्रम प्रभावित हुए लेकिन फिर भी कोरोना सुरक्षा अधिनियम का ध्यान रखते हुए समुदाय में जाकर बच्चों को खेल – खेल में नयी – नयी जानकारी से रूबरू करवाने का प्रयास किया गया है। साथ ही साथ केंद्र खुल जाने के बाद बच्चों का जुड़ाव पुनः आंगनवाड़ी से पहले की तरह ही हो सके, इस दिशा मे उचित कदम उठाये गये । पत्रिका के इस अंक में हम पिछले वर्ष की गतिविधियों की एक छोटी सी झलक पेश कर रहे हैं , साथ ही साथ कोविड महामारी के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में की गयी नयी पहल को आप सभी के साथ साझा कर रहे हैं।

सप्रेम
मधुबाला
फैसिलिटेटर, बालघर आंगन

हमारी कार्य प्रणाली

परिवर्तन के अंतर्गत बालघर आँगन आस-पास के कुल 21 गाँवों के 46 आंगनबाड़ी केंद्र के साथ कार्यरत है। हमारा काम 3 से 6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के अन्दर मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक विकास को प्रबल करना है। मानव जीवन में यह उम्र ही ऐसी उम्र होती है जिसे गीली मिट्टी कहा जाता है अर्थात यह एक ऐसी आयु सीमा है जिसमें बच्चों का सर्वाधिक बौद्धिक विकास होता है। हम भी इस बात का ध्यान रखते हुए,बच्चों के विकास के लिए खेल- खेल के माध्यम से उनको भविष्य के सफल नागरिक बनने हेतु तैयार करते हैं ताकि ये बच्चे यहाँ से जाकर अपने केंद्र पर सबके लिए आदर्श बन उभरें और अन्य बच्चों को प्रेरित करें।

क्लास के लिए हमलोगों के पास 6 माह की एक कार्य-योजना है। इस कार्य-योजना को बनाते समय हमलोगों ने बच्चों की उम्र तथा उनकी बौद्धिक अवस्था को समझने का प्रयास किया है। जिसके लिए हम दिल्ली में अवस्थित जोड़ो ज्ञान केंद्र, प्रथम, प्रार्थना, किताब अश्वत्य तथा दिल्ली पब्लिक स्कूल पटना की शिक्षिका एवं परिवर्तन के साथियों को धन्यवाद देना चाहते हैं जिनके सहयोग से बच्चों के लिए कार्य-योजना तैयार हो पायी।

हमारी कार्ययोजना में मुख्य रूप से तरह-तरह की आवाजों (फोनेटिक साउन्ड) कि पहचान, अपने परिवार की जानकारी , देशभक्ति कविता, मन के खाने , तरह तरह के पोषक तत्व आदि की जानकारी को शामिल किया गया है ताकि बच्चे इन आवश्यक बातों को खेल खेल के माध्यम से समझ पायें।

कोरोना काल के दौरान – बच्चो से जुड़ाव

कोरोना माहामारी से आज, हर एक जीव पर प्रभाव पड़ा है। हाँ माना केसेज कुछ कम हुए हैं पर कोरोना का प्रभाव हमें आज और अभी भी परेशान कर रहा है। देश, विदेश, शहर और गाँव चारों तरफ इसकी वजह से हर किसी की जीवन शैली बदली है और पढाई-लिखाई तो पूरी रुक सी गई थी, फिर भी बच्चों को परिवर्तन द्वारा ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर पहले की तरह पढ़ाने का प्रयास जारी था। इस दौरान हमें बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा जैसे : समय पर मोबाइल उपलब्ध न रहना,ऑनलाइन क्लास हेतु बच्चो में कम रूचि, अभिभावक को अपने इस प्रयास को समझा पाना, नेटवर्क की परेशानी, बच्चों का समय पर उपस्थित न होना और मौसम की वजह से कभी–कभी फ़ोन का चार्ज न होना।

इन सारी चुनौतियों का सामना करके हमलोगों ने अपनी ऑनलाइन क्लास द्वारा बच्चों के साथ शिक्षा का आदान-प्रदान जारी रखा, जिससे वे हमारे इस प्रयास से समुचित लाभ उठा सकें। हमारा पहला कदम बच्चों और अभिभावकों को ज़ूम ऐप के बारे में बताना था। अभी तक उनके पास ज़ूम अप्लिकेशन की कुछ जानकारी नहीं थी, उनसे बातचीत के माध्यम से ज़ूम ऐप के फायदे बताना और डाउनलोड की प्रक्रिया साझा करना जारी रहा। इस दौरान बहुत परेशानी हुई ; कितने लोगों को डाउनलोड की प्रक्रिया पता नहीं थी और ज़ूम ऐप के बहुत सारे आप्शन की वजह से अभिभावक भ्रमित हो जा रहे थे। फिर उन्हें सही लिंक भेज कर ज़ूम ऐप डाउनलोड करवाया गया । इससे उन्हें फ़ोन के बारे में जानकारी हुई साथ में ज़ूम ऐप से वे ठीक तरह से अवगत हो पाए।

हमारा दूसरा कदम

ऑनलाइन क्लास की रूटीन हमलोग पहले से प्लान कर उसके अनुसार ही कोई गतिविधि कराते थे। सुबह की मीटिंग जो 9:00 से 10:00 तक जारी रहती थी उसके बाद ही हमलोग अपनी क्लास शुरू करते थे।

इस दौरान हर दिन की अलग रूटीन और गतिविधि थी। दिन को देखकर हमने बच्चों और सेविकाओं के ऑनलाइन कॉल्स का प्लान किया था सोम, मंगल, बुध–बच्चों के साथ और गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार–सेविकाओं के साथ नियमित क्लास हुई।

इसके अलावा उनके लिए कठपुतली (पपेट) की मदद से कहानी तैयार कर उनके पास मोबाइल के जरिऐ भेजना, बालगीत हाव-भाव के साथ तैयार कर उससे अवगत करना, youtube की मदद से उनके लिए गतिविधि तैयार करना, किताबें भाव के साथ पढ़ना, क्षमता विकास पर ध्यान देना ताकि हमारे बच्चे इस महामारी में भी सीखने का प्रयास जारी रखें। सबसे जरूरी यह कि इस गतिविधि के माध्यम से अभिभावक को अपने इस प्रयास से रूबरू करवाना ,जिससे वह समझ कर हमारे प्रयास से लाभ उठाकर अपने बच्चों की पढ़ाई पर इस महामारी का प्रभाव न पड़ने दें। साथ में हमलोगों ने ज़ूम एप्प के द्वारा दो –तीन कार्यक्रम भी आयोजित किये जिसमें बच्चों और सेविकाओं की भागीदारी भी काफी अच्छी रही और इस कार्यक्रम पर हमारे बच्चों और सेविकओं की बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली। सबने इस बीच स्क्रीन शेयरिंग करना भी सीखा, इस दौरान पढ़ने की नई शैली बढ़ी। सेविकाओं के साथ गतिविधि की गयी जिसमें चर्चा की गयी कि क से कबूतर ही क्यों? क से कर्म क्यों नहीं?

बालघर आंगन द्वारा चलाये गए क्रियाकलाप को बच्चों और सेविकाओं तक ऑनलाइन क्लास द्वारा सही रूप से पहुंचा पाना

यह एहसास हुआ कि हम बच्चों के दिमाग में दूसरे शब्द आने ही नहीं देते ना उन्हें दूसरे शब्द सोचने का मौका देते हैं। अगर हम अपनी सोच बदल पाएंगे तभी उनमें भी कुछ बदलाव ला पाएंगे। बच्चों को तरह–तरह के शब्दों से अवगत करना, जिससे वह अपने आस –पास की चीजों और अपने अधिकार से भी अवगत हो सकें बहुत जरूरी है। इन्ही सब कमियों को सुधारने की हमारी यह छोटी सी कोशिश गतिविधि के रूप में शामिल रही। अब लगता है कि हमारे द्वारा आयोजित की हुई गतिविधि से उन्हें लाभ भी मिला है। दूसरी गतिविधि (कहानी पाठ)हमने बच्चों के साथ भी की थी, जिसको करके हमें बहुत ख़ुशी मिली । इसके दौरान बच्चे अपनी कल्पनाओं में छलांग लगा रहे थे। ऑनलाइन क्लास के बाद भी कॉल के जरिए अभिवावकों और सेविकाओं से हमारी बातचीत जारी रहती थी। सेविकाओं से वर्तमान में चल रहे कार्य की जानकारी लेना बना रहा । अविभावक भी हमारे इस कार्य से अब खुश होने लगे थे और हमें समझने लगे थे । इन सारी गतिविधियों में बच्चों की संख्या भी ठीक थी। बच्चों की संख्या 17-18और सेविकओं की 20 तक थी।

समुदाय क्लास–चुनौती से सफलता तक का सफ़र (कार्य-अनुभव)

इस बार सत्र 2021-22 में समुदाय के बच्चों के साथ काम करने का मौका मिला। वैसे समुदाय के बच्चों के साथ हमारा काम तो होता ही था पर इस बार कोविड महामारी के कारण आंगनवाड़ी केंद्र बंद होने से हमारा क्लास आंगनबाड़ी केंद्र पर नहीं हो पायी। बच्चे घर पर रहने लगे और यही वह उम्र है जिसमें बच्चों का मानसिक, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास सबसे ज्यादा होता है, वही बाधित होने लगा। इस बात कि अहमियत को समझते हुए हमलोगों ने समुदाय में ही बच्चों को इकठ्ठा कर खेल खेल के माध्यम से उनकी क्लास बालघर आँगन करिकुलम के आधार पर प्रारंभ की । हमारे करिकुलम की अवधि लम्बे समय की थी इसलिए हमें यह चिंता भी सता रही थी कि पता नहीं समुदाय में इतने लम्बे समय तक बच्चे नियमित हो पाएंगे कि नहीं। फिर भी पांच समुदाय के साथ काम

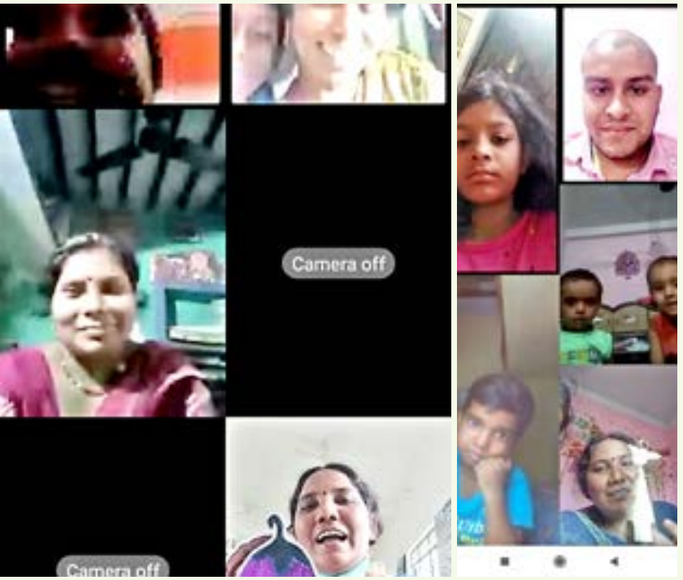

शुरू हुआ। शुरू के एक-दो दिन तो बहुत अच्छे से सब कुछ रहा पर धीरे-धीरे समस्या सामने आने लगी। बड़ों के साथ काम करना और 3 से 6 साल के बच्चों के साथ काम करने का अनुभव काफी अलग होता है। बच्चे क्लास के समय ही सो जाते थे तो कभी बच्चे नानी के घर तो कभी बुआ के घर घूमने चले जाते थे। कभी कभी उनकी माँ आकर बोलती आज छोड़ दीजिये आज उसका मन नहीं कर रहा। कभी बच्चे माँ के साथ धान की कटाई में खेत घूमने चले जाते थे। ये सब देखते हुए मैं अपने क्लास को लेकर फिर से चिंतित हो गयी। पर धीरे-धीरे समुदाय के अभिभावक भी हमारे काम को समझने लगे कि "परिवर्तन की मैडम जी रोज अपने समय के अनुसार हमारे गाँव में आ जाती है तो हमारे बच्चों के ही भविष्य के लिए ही ना और हमलोग इसकी महत्त्व को समझ नहीं पा रहे। " इसके बाद अभिभावक अपने बच्चों को लेकर निर्धारित समय और स्थान पर पहुँचाने लगे। उस समय मुझे किसी कार्य के उपरांत उसकी सफलता का फल कितना मीठा होता है यह स्वाद चखने का अवसर प्राप्त हुआ। बच्चों को अपनी ओर आते देख तथा क्लास में नियमितता देख मैं बहुत खुश हुई कि मुझे फिर से अवसर मिल रहा है एक सफल नागरिक कि नींव तैयार करने का । इसके साथ ही साथ समुदाय के साथ सहयोग, विश्वास तथा जुड़ाव और प्रबल होता गया।

आंगनवाड़ी सेंटर पर महिलाओं के लिए कार्यक्रम

दिंनाक 7 – 9 - 21 को उमरावती जी के सेंटर पर गोद भराई दिवस मनाया जा रहा था। जिसमें परिवर्तन का सहयोग भी था। उस दिन नरेन्द्रपुर पंचायत की सभी सेविकाओं के साथ गोद भराई एक ही केंद्र पर मनाया जा रहा था। हर दिन की तरह मैं उस दिन भी समय को देखते हुए उनके सेंटर पर पहुँची तो बाहर से ही लग रहा था कि यहाँ कोई कार्यक्रम होने वाला है। आंगनवाड़ी सेंटर के गेट पर बहुत सारा गुब्बारा लगाया गया था और साथ – साथ ही साथ उसी जगह पर बहुत ही सुन्दर तरीके से रंगोली भी बनाया गया था। जब मैं भवन के अंदर गई तो हमको देखते ही उमरावती जी के चेहरे पर मुस्कान आई, बोलीं-"मैडम जी आईये और आपके परिवर्तन के और सदस्य कहाँ हैं? केंद्र पर पांच महिलाओं का गोद भराई है, आप यहाँ आकर बैठिये और कार्यक्रम को पूरा देख के ही जाइएगा।" फिर मैं उमरावती जी की बातों का आदर करते हुए बैठ गई और कार्यक्रम शुरु होने का इंतजार करने लगी तभी परिवर्तन की सारी टीम आ गयी। यह देख के उमरावती जी एकदम उत्सुक हो गयीं और बिन सेविकाओं के ही कार्यक्रम शुरू करने को कहने लगी। थोड़ी ही देर के बाद महिलाएं और बच्चे आना शुरु किए और कार्यक्रम शुरु हुआ। रंगमंडली द्वारा 2 गानों की प्रस्तुती हुई जो पूर्ण रूप से पोषाहार पे थी। इन्ही सब विषयों पर देर तक बात हुई और सेविकाओं ने महिलाओं और बच्चों को मिठाई देते हुए कार्यक्रम को समाप्त किया।

फीडबैक, सेविका –महिलाओं के चले जाने के बाद मेरी बात उमरावती जी से हुई और उन्होंने कहा-" परिवर्तन के सहयोग से बहुत ही सुंदर तरीके से कार्यक्रम हुआ जैसा की हम सोचे भी नहीं थे । कोई भी कार्यक्रम अगर हम बेहतर से नहीं करेंगे तो किसी भी को मेरे उपर विश्वास नहीं होगा ,इसीलिए मैं हर कार्यक्रम को अपने सेंटर पर बेहतर तरीके से करती हूँ।

बच्चों की बातें

बच्चों की बातें कहानी पाठ के दौरान बच्चों ने तरह -तरह की कल्पनायें बुनी , जैसे सिवराज ने बोला-“ मेरी माँ मेरी बेस्ट फ्रैंड है, वो मुझे खाना खिलाती है ,मुझे घूमने जाने के लिए मुझे नया कपड़ा पहनाती है, घर में मेरी मम्मी मुझे सबसे ज्यादा प्यार करती है। “सिवराज की बातें अभी ख़त्म नहीं हुई थी कि सत्यम बोलने लगा-“जिस तरह कहानी में राकेट था, अगर मुझे मिलता तो उस राकेट में बैठकर उसका बटन दबाकर सीधे आकाश में उड़ जाता और कभी लौटकर नहीं आता। अपने खाने के लिए बहुत सारी चीजें लेकर जाता जैसे:- बिस्कुट,चिप्स,चॉकलेट और उसी रोकेट में बैठकर खाता।”

आइये जानिए हमारे कुछ प्यारे बच्चो के बारे में

नाम – शियांश कुमार,
उम्र – 4 वर्ष, ग्राम – नरेन्द्रपुर

शियांश कुमार नरेन्द्रपुर का रहने वाला है। जब वह पहली बार अपनी बुआ के साथ बालघर में क्लास करने आया तो बुआ का हाथ छोड़ ही नहीं रहा था। बुआ उसे बार -बार हाथ छोड़ने बोल रही थी पर वह स्तब्ध खड़ा बस मुझे ही गौर से देख रहा था मानो जैसे उसके मन में मुझे लेकर कई प्रश्न उठ रहे हों। उसकी आँखे मुझसे मेरे परिचय से लेकर मेरे स्वभाव सम्बंधित बहुत सारे सवाल जबाब कर रही थीं । ऐसा लगा जैसे वह अपनी आँख से ही मेरा फोटो स्कैन कर रहा हो। पहला दिन ना तो वो रोया और ना ही किसी से कुछ बात किया। बस वहां जो भी हो रहा था वो सभी गतिविधि को ध्यान से निहार रहा था। बच्चों का दिल निश्छल होता है वो सभी से दोस्ती तुरंत कर लेते हैं इसलिए क्लास के अन्य बच्चे उनसे बात करने का प्रयास किये पर सभी विफल रहे। दूसरे दिन जब वह दुबारा अपने पापा के साथ आया तो मुझे देखते ही जोर जोर से रोने लगा मानो मैंने उसे कोई कड़वी दवा पिला दी हो। उसके पापा भी शियांश के साथ कुछ देर सभागार में बैठे रहे फिर बड़ी मुश्किल से बालघर क्लास में आया। कुछ दिनों तक उसकी आँखें परिवर्तन के नाम पर गंगा-यमुना बरसाईं फिर देखते ही देखते शियांश पूरे क्लास का हीरो बन गया। अब वह रोज परिवर्तन अपने पापा, चाचा तथा दीदी के साथ आने लगा। इतना ही नहीं इसकी माँ से पता चला कि वह परिवर्तन जाने का इंतजार सुबह जागने से ही करने लगता है और यहाँ की गतिविधिओं को उत्साह से सीखने लगा। शियांश छोटा था इसलिए इसके साथ मुझे ज्यादा मेहनत करनी पड़ी। पर कहा जाता है ना कि “अंत भला तो सब भला,”शियांश को ख़ुशी ख़ुशी क्लास में देख कोई परेशानी याद ही नहीं आती। अब शियांश परिवर्तन छोड़ने आये पापा को नियमित रूप से “बाय पापा,” बोलकर ही बालघर में प्रवेश करता और मुझे देखकर खुश होकर कहता है, “नमस्ते मिस।”

नाम – अनिश कुमार,
ग्राम – नरेन्द्रपुर, उम्र - 5 साल

अनिश बहुत ही प्यारा बच्चा है वह अपनी बहन चुलबुली के साथ शाम के समय क्लास में रोज आता है और आते के साथ ही वह लकड़ी के ब्लॉकक्स के साथ खेलने में लग जाता है तथा उसको किसी बच्चे से मतलब नहीं रहता है। क्लास में और बच्चे क्या कर रहे हैं इसकी भी उसको कोई परवाह नहीं होती । वह अपने आप में ही मस्त रहता है। एक दिन वह लकड़ी के ब्लॉकक्स से घर बना रहा था तो मैने उससे पूछा,-“ये तुम क्या कर रहे हो?”तो उसने जो जवाब दिया उससे मैं चकित रह गई। उसने कहा –“मै बड़ा होकर एक बड़ा सा घर बनाऊंगा और उसमें अपने पूरे परिवार- अपने दादा,दादी, बुआ चा,चा,चाची और माँ-पापा के साथ खूब ख़ुशी से रहूँगा| अपने घर के सामने एक गार्डन लगाऊंगा और उसमें बहुत सी हरी साग-सब्जी भी बोऊंगा।“ अनिश की बातें सुनकर बहुत खुशी हुई और मैं सोचने लगी कि लकड़ी के ब्लॉकक्स से उसके अन्दर इतनी समझ आ गई कि वो इतना कुछ बताने लगा। पहले घर में नींव बनाते हैं फिर दीवाल बनाते हैं , उसके बाद छत बनाते हैं और उसके बाद घर पूरा बन जाता है|

उससे मैंने पूछा,-“ये बताओ कि तुम पढ़ लिख लोगे तो बड़े होकर क्या बनोगे?” तो उसने बताया,-“मै जब बड़ा हो जाऊंगा तो बड़ी-बड़ी इमारतें बनाऊंगा।”

व्यवहार में परिवर्तन

सेविका - रेखा देवी, घर -भवराजपुर, उम्र -40 साल

रेखा देवी का मायके और ससुराल का दूरी ज्यादा नहीं। उनके चार बच्चे हैं और पति किसान है। परिवर्तन की तरफ से मुझे रेखा जी के सेंटर पर काम करने का मौका मिला। बात ज्यादा लम्बे समय कि नहीं है, कुछ दिनों पहले की ही है जब परिवर्तन द्वारा कराये जाने वाले सेविका प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था। जिसमें (भवरापुर पंचायत) भी शामिल था। प्रशिक्षण के लिए सेविकाओं को सूचना देना बहुत जरूरी था। जिसके लिए मैं भवराजपुर, रेखा जी के सेंटर पर पहुँची। सेंटर पर बच्चे नहीं थे। सेविका चुप- चाप बैठी हुई थी। मेरे जाने से उनको कोई फर्क नहीं पड़ा वो चुप -चाप बैठी रही। आखिर मुझे ही उनके पास जाना पड़ा। बात शुरू हुआ। मैंने अपना परिचय दिया और उनसे बताया कि परिवर्तन द्वारा सेविका प्रशिक्षण का आयोजन हो रहा है जिसमें भवराजपुर पंचायत भी शामिल है और पंचायत में आपको ही सूचना देना है, आफिस से बोला गया है। सेविका मेरी इतनी सारी बातें सुनती रही पर उसका जबाब कुछ नहीं दिया। समय समाप्त हो गया और मैं परिवर्तन वापस लौटने लगी। रास्ते में उन्ही के बारे में सोच रही थी कि इनके साथ काम बहुत मुश्किल लग रहा है। कुछ करन होगा। मैंने उनके सेंटर पर नियमित काम करना शुरु का मन बना लिया और प्रत्येक सप्ताह में एक दिन उनके सेंटर का विजिट रखी। समय बीतता गया धीरे–धीरे उनसे मेरा जुड़ाव बढ़ता गया। उनके सेंटर पर जिस दिन मेरा 10 वां विजिट था ,उस दिन मैं जल्दी उनके सेंटर पर चली गई। बच्चे नहीं आये थे, सेविका भी नहीं थी। कुछ देर बैठने के बाद धीरे- धीरे बच्चों का आना शुरू हुआ उसके पीछे-पीछे सेविका भी केंद्र पर आ गयी। सेविका ने जब मुझे वहां बैठे देखा तो पहली बार मुस्कुराई और मुस्कुराने के क्रम में मुझसे बोली “मैडम जी आप कब आईं? और आईं हैं तो आज का क्लास बच्चों का आप ही कुछ लीजिये ना।“ सेविका की बातों का सम्मान करते हुए मैंने क्लास प्रारंभ की। इसके बाद से मैंने सप्ताह में एक दिन उसके केंद्र पर अपने क्लास की योजना बनायींऔर जाने लगी। इस तरह धीरे-धीरे वह हमारे काम को समझने लगी और उससे भी ज्यादा वह मेरे स्वभाव से परिचित हो गयी। इस तरह सेविका रेखा देवी भी अब मेरी अच्छी सहेली बन गयी। कोई भी कार्यशाला हो या क्लास सम्बंधित कोई भी कार्य हर बात के लिए वह सजग रहने लगी। उसका केंद्र भी सुदृढ़ होने लगा। आज रेखा देवी का केंद्र आदर्श केंद्रों में से एक केंद्र है।